संदेश

पीएलजीए की 25 वीं वर्षगांठ को 2025 दिसंबर 2 से 8 तक देशभर में क्रांतिकारी उत्साह के साथ मनायेंगे!

प्रतिक्रांतिकारी ‘कगार’ युद्ध से पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठनों को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे! साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद, सामंतवाद की गुटजोड के विरोध में, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी आरएसएस–भाजपा की केंद्र–राज्य सरकारों के विरोध में वर्गसंघर्ष को तेज करेंगे!

पीएलजीए की 25 वीं वर्षगांठ के अवसर पर तमाम पार्टी, पीएलजीए, जन निर्माणों तथा उत्पीडित जनता को केंद्रीय सैनिक आयोग (सीएमसी), भाकपा (माओवादी) का आह्वान!

सेंट्रल मिलिटरी कमिशन (सीएमसी)
सीपीआई (माओवादी)

पीएलजीए की 25 वीं वर्षगांठ को 2025 दिसंबर 2 से 8 तक देशभर में क्रांतिकारी उत्साह के साथ मनायेंगे!

प्रतिक्रांतिकारी 'कगार' युद्ध से पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठनों को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे!

साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद, सामंतवाद की गुटजोड के विरोध में, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी आरएसएस–भाजपा की केंद्र–राज्य सरकारों के विरोध में वर्गसंघर्ष को तेज करेंगे!

प्यारे कामरेडों व जनता!

देश में नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए जनयुद्ध चलाने वाली जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) को इस 2 दिसंबर तक 25 वर्ष पूरा हो जायेंगे. इस अवसर पर 2 से 8 दिसंबर तक पीएलजीए के वर्षगांठ समरोहो को देशभर में जंगली, मैदानी एवं शहरी इलाकों में क्रांतिकारी उत्साह व दृढ़संकल्प के साथ मनाने तमाम पार्टी कमेटीयों एवं पार्टी कतारों, पीएलजीए कमांडो एवं युनिटों, जनसंगठनों व क्रांतिकारी जनता को केंद्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) आह्वान करती है.

इस अवसर पर तमाम क्रांतिकारी शिविर को सीएमसी यह आह्वान करती है कि ''प्रतिक्रांतिकारी 'कगार' युद्ध से पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठनों को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे. साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद, सामंतवाद गटजोड के विरोध में, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी आरएसएस–भाजपा की केंद्र–राज्य सरकारों के विरोध में वर्गसंघर्ष को तेज करेंगे.''

पीएलजीए की 24 वीं वर्षगांठ के अवसर पर सीएमसी द्वारा तमाम पार्टी, पीएलजीए, जन निर्माण, क्रांतिकारी जनता के सामने जिन कर्तव्यों को रखा गया, उन्हे पूरा करने के लिए पिछले सालभर में उत्साह, दृढ़संकल्प एवं धैर्य व साहस के साथ कार्यरत तमाम पार्टी कमेटीयों, पार्टी कतारों, पीएलजीए कमांडो (कमानो), पीएलजीए कमांडरों एवं योद्धाओं, जन संगठनों के नेताओं व कार्यकर्ताओं, जन मिलिशिया सदस्यों एवं क्रांतिकारी जनता को सीएमसी क्रांतिकारी अभिनंदन पेश करती है. पिछले एक वर्ष से जारी प्रतिक्रांतिकारी 'कगार' युद्ध को साहसिक रूप से सामना करते हुए, राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक, सांस्कृतिक, टेकनिकल काम करने वाले सभी कामरेडों को सीएमसी

क्रांतिकारी अभिनंदन पेश करती है. देश की क्रांतिकारी इलाकों में चलायी गयी गुरिल्ला युद्ध कार्रवाईयों में घायल हुए कामरेडों ने शीघ्र ठीक होकर समरोत्साह के साथ गुरिल्ला युद्ध में अपनी जिम्मेदारी निभाने की विश्वास करती है.

पिछले सालभर में कगार युद्ध को बहादुरी से प्रतिरोध करते हुए जान की कुरबानी किए वीर गुरिल्ला योद्धाओं को, घेराबंदी हमलों, मुठभेडों एवं फर्जी मुठभेडों में, दुश्मन पर किए गये युद्ध कार्रवाईयों में, विश्वासघातों में, दुर्घटनाओं में, अस्वस्थता की वजह से और अन्य कारणों से अपनी जान गंवाने वाले तमाम अमर शहीदों को सीएमसी सिर झुकाकर विनम्रतापूर्वक क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करती है. 2024 जनवरी से शुरू होकर, पिछले सालभर से दिन ब दिन और भी भीषण रूप से चल रही कगार युद्ध से डरे बिना, जिंदा रहने तक प्रतिरोध ही हमारा रास्ता है करके नारा लगाते हुए दुश्मन को प्रतिरोध करते हुए अपना जान को कुरबानी करने वाले शहीदों का बेमिसाल धैर्य व साहस, दुश्मन का सामने सिर न झुकाने वाली शहीदों का हिम्मत, मौत से न डरने वाली और थकावट को परवाह न करने वाली उनकी माओवादी युद्धशैली, जनता के प्रति उनका समर्पण आत्माबलिदान की चेतना तथा क्रांति की जीत पर अटल विश्वास हमारे लिए सदा आदर्शपूर्ण एवं अनुसरणीय हैं. उनके बलिदानों को ऊंचा उठाये, उनके साहसिक प्रतिरोध की वीर गायाओं को दुनिया भर प्रचार करे, उनके आदर्शों का गीत गाये, उनके नक्शे कदम चलते हुए, उनके लक्ष्य हासिल करने के लिए अंतिमशांस तक लड़ने की शपत ले.

भारत की नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लक्ष्य से, प्रतिक्रांतिकारी 'कगार' युद्ध को प्रतिरोध करते हुए विगत 11 महीनों में (दिसंबर 2024 से नवंबर 2025 तक) देशभर में 320 कामरेड्स शहीद हुए. इन में 183 पुरुष और 117 महिला कामरेड्स हैं. 20 जन का विवरण नही मिला.

बिहार–झारखंड़ में 22 कामरेड्स, अस्साम में एक कामरेड, दंडकारण्य (डीके) में 243 कामरेड्स, ओडिशा में 33 कामरेड्स, महाराष्ट्र–मध्यप्रदेश–छत्तीसगढ़ (एमएमसी) में 7 कामरेड्स, तेलंगाणा में 8 कामरेड्स, एओबी में 6 कामरेड्स शहीद हुए. इनमें अपना पार्टी का महासचिव कामरेड बसवराजु (बीआर) सहित 8 जन केंद्रीय कमेटी सदस्य, 15 राज्य कमेटी स्तर का कामरेड्स, 25 जिला कमेटी स्तर का कामरेड्स, 73 एरिया कमेटी स्तर का कामरेड्स, 116 पार्टी सदस्य, 13 पीएलजीए सदस्य, 33 स्थानीय जननिर्माण का सदस्य और जनता शामिल हैं. 37 कामरेड्स का स्तर का पता नहीं मिला. उसके अलावा देशभर में जनांदोलनों में कार्यरत कई क्रांतिकारी, प्रगतिशील व जनवादी जनसंगठन के नेता व कार्यकर्ता, बुद्धिजीवी, क्रांतिकारी समर्थक एवं मित्रों का निघन हो गया. फिलिप्पीन्स की क्रांतिकारी आंदोलन में वहा की क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीपी) का कुछ केंद्रीय कमेटी सदस्य, न्यू पीपुल्स आर्मी का

कुछ कमांडर्स और सदस्य, नेशनल डेमाक्रटिक फ्रंट का कुछ नेतृत्वकारी कामरेड्स एवं सदस्य शहीद हुए. अमेरिका की समर्थन से यहुदी अहांकारवादी इजराईल सरकार ने फिलिस्तीन की गाजा की जनता पर पिछले 2 सालों से चला रही नरसंहार की युद्ध में लगभग 75 हजार फिलिस्तीनी जनता एवं लडाकू शहीद हुए. इन तमाम शहीदों को सीएमसी क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करती है.

कगार युद्ध में अपना पार्टी का महासचिव कामरेड बसवराजु सहित 8 जन केंद्रीय कमेटी सदस्यों को, 15 जन राज्य कमेटी सदस्यों को कुल मिलाकर 320 कामरेड्स को खो कर क्रांतिकारी आंदोलन गंभीर नुक्सानों का सामने करने की स्थिति में, सोनु, सतीश की गिरोह दुश्मन को हथियार सौंपकर, दुश्मन को आत्मसमर्पण करके क्रांतिकारी आंदोलन को गंभीर नुक्सान पहुंचाने की स्थिति में अपन पीएलजीए का 25 वीं वर्षगांठ मना रही हैं. इस स्थिति में क्रांतिकारी आंदोलन की भविष्य के बारे उत्पन्न हो रही सवालों को जवाब देते हुए, भयभीत हुआ लोगों को हिम्मत दिलाते हुए, उन में आत्माविश्वास भरते हुए, दृढ़संकल्प से, अद्वितीय धैर्य–साहस के साथ खडे होकर तमाम क्रांतिकारी शिविर को क्रांतिकारी आंदोलन में आगे लेजाना ही आज अपना पार्टी का, पीएलजीए का कर्तव्य है. इस कर्तव्य पूर्ती के अंतर्गत पीएलजीए की वर्षगांठ मनायेंगे.

इस कर्तव्य पूर्ती के लिए वर्तमान क्रांकिारी आंदोलन में घटित होने वाले नुक्सानों की कारणों को पता लगाकर उसे सुधारेंगे, वस्तुगत स्थिति में (अब्जेक्टिव कंडिशन), आत्मगत परिस्थिति में (सब्जेक्टिव कंडिशन) क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए उत्पन्न होने वाले विषयों को समझकर उस पर आधारित होकर पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठनों को मजबूत करेंगे.

'कगार' युद्ध की शुरूआत से अपना पार्टी का, पीएलजीए का बल, स्थानीय गुप्त जनसंगठन गंभीर नुक्सान हुए और नुक्सान हो रही हैं. अपना पार्टी, पीएलजीए बल, गुप्त जनसंगठन गुप्त काम–काज पद्धति को, गुरिल्ला युद्ध नियमों को, केंद्रीय कमेटी द्वारा तय किया गया दावपेंचो को सही तरीका से लागू नही करने के वजह से यह नुक्सान हो रही है. अपना बल छोटे इलाका तक सीमित न होकर, व्यापक इलाका में घूमना; केंद्रीत न रहते हुए विकेंद्रित होकर रहना; कानूनी–गैरकानूनी, खुला–गुप्त संघर्ष और संगठन रूपों को समन्वय कर वर्गसंघर्ष चलाना; शहरी, मैदानी, जंगली इलाकों में मजदुर, किसान, मध्यमवर्ग, राष्ट्रीय पूंजीपतियों को, उत्पीडित सामाजिक तबको को, उत्पीडित राष्ट्रीयताओं को क्रांतिकारी आंदोलन में लामबंद करना, इन राजनीतिक, सैनिक दावपेंचो को सही तरीका से अमल न करने की वजह से अपना बल भारी संख्या में नुक्सान हो रही हैं. कगार युद्ध का मुख्य केंद्र बिन्दु दंडकारण्य में है. वहा से पार्टी, पीएलजीए बलों को दूसरा इलाकों में रिट्रीट (पीछेहटना) नही करने की वजह से अपना बल गंभीर नुक्सान हो रही हैं.

इसलिए, विगत 22 महीनों से अपना आचारण में उत्पन्न हुआ गलतियों को समझकर उसे सुधारते हुए अपना केंद्रीय कमेटी, पोलित ब्यूरो द्वारा तय की गई दावपेंचो को सही तरीका से लागू करते हुए अपना पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठनों को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे.

केंद्र, राज्य सरकारों से चलाये जा रही कगार युद्ध के चलते अपना बल गंभीर नुक्सान होने के बावजूद अपना बलों की, क्रांतिकारी जनता की बहादुराना प्रतिरोध से दुश्मन की सशस्त्र बल भी काफी संख्या में नुक्सान हो रही है. इस नुक्सनों को बताने से क्रांतिकारी शिविर का मनोबल बढ़ेगा–ऐसा सोचाकर दुश्मन ने इस नुक्सानों का बारे में नही बता रही है. यह मानसिक युद्ध का दावपेंच है. इसलिए इस मानसिक युद्ध का प्रभाव से क्रांतिकारी शिविर बचना चाहिए. पिछले एक साल में, दंडकारण्य, बिहार–झारखण्ड़, पूर्वी बिहार–पूर्वोत्तर झारर्खण्ड, ओडिशा, एमएमसी इलाकों में केंद्रीय सुरक्षा बलों की, राज्यों की सुरक्षा बलों की, विभिन्न तरह कमांडो बलों की 116 सुरक्षा बल मारेगये, 208 घायल हुए हैं. इसी दौरान कुछ गोपनीय सैनिकों को, पुलीस मुखबिरों को, भाजपा की जन दुश्मन नेताओं को अपना पीएलजीए ने मार गिराया. कार्पोरेटीकरण को सुगम बनाने के लिए बनाये जाने वाले रोड निर्माण में लगे हुआ कुछ वाहनों को, कुछ मोबाईल टावरों को जला दिया गया. देशभर में 72 घेराबंदी हमलों में, मुठभेड़ में पुलीस, केंद्रीय और राज्य सुरक्षा बलों से, कमांडो बलों से, भारत सेना से पीएलजीए बल प्रतिरोध किया.

बीते एक वर्ष में कगार युद्ध को विफल करने के लिए अपना पीएलजीए बलों ने मुख्यता इंप्रुवाईज्ड एक्सप्लोजिव डिवैजों को (आईईडी) स्थापित कर दुश्मन की सशस्त्र बलों को नुक्सान पहुंचाया. इसके साथ–साथ घेराबंदी (इनसर्किलमेंट हमला) हमलो को, मुठभेडो को बहदुराना तरीका से प्रतिरोध करना, एम्बुशों को अंजाम देना, पुलीस मुखबिरों को खत्म करना, जन दुश्मन भाजपा नेताओं को खत्म करना, स्पाईकहोल्स को लगाना–इस दावपेंचो को लागू करते हुए गुरिल्ला युद्ध को चलाई.

इस साल भी गुरिल्ला युद्ध का विस्तृत, तीव्रता घटगयी. इसके चलते सरकारी सशस्त्र बलों से सिर्फ 5 हथियारों को ही अपना पीएलजीए जप्त कर सकी. दूसरी तरफ 'कगार' युद्ध के चलते अपना पार्टी, पीएलजीए बल, जन संगठनों ने गंभीर नुक्सान हुआ. इसके चलते देशभर का क्रांतिकारी आंदोलन को गंभीर नुक्सान हुआ.

देशभर का क्रांतिकारी आंदोलन गंभीर नुक्सान होने के बावजूद देश में पार्टी युनिटों की मौजूदीगी वाले हर जगह में अलग–अलग स्तर में क्रांतिकारी राजनीति को जनता में ले जाने की राजनीतिक काम करना, जनता को लामबंद करते हुए साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद (सीबीबी), सामंतवाद विरोधी,

कार्पोरेटीकरण, सैनिकीकरण विरोधी संघर्षों को चलाना, जनता को विभिन्न किस्म का जन निर्माणों में संगठित करना, जनता पर, जन मिलिशिया पर आधारित होकर पार्टी, पीएलजीए छोटे, विकेंद्रित कार्रवाईयों के रूप में आत्मारक्षा की गुरिल्ला युद्ध को चलाना, कगार (आखिरी युद्ध) के नाम पर केंद्र, राज्य सरकारे क्रांतिकारी आंदोलन चलने वाले इलाकों में 8,50,000 पुलीस को, केंद्रीय सुरक्षा बलों को, कमांडो बलों को, भारत सेना को, वायु सेना को तैनात करके घेराबंदी–निर्मुलन हमला करने के बावजूद उन हमलों को बहादुराना तरीका से प्रतिरोध करना, उन हमलों को तोडना–ऐसी कई सारे सकरात्मक कामों को अपना पार्टी, पीएलजीए बलों ने अमल की. और, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाणा, झारखण्ड राज्यों से सभी प्रकार के सशस्त्र बलों को, केंद्रीय सुरक्षा बलों को, कमांडो बलों को, भारत सेना बलों को, वायुसेना बलों को तैनात करके, अमेरिका, इजराईल की सैनिक अधिकारियों की, तकनिशियानों की बागिदारी से चलाये गई कर्रेगुट्टा अभियान को अपना बल विफल की. बीते 3 सालों से झारखण्ड की पश्चिम सिंहभुम जिला में केंद्रित करते हुए केंद्र, राज्य सरकारे हमलों की अभियानों को चलाने से भी प्रतिरोध करते हुए दुश्मन की सशस्त्र बलों को काफी संख्या में नुक्सान पहुंचा रही है. यह तमाम अपना सकरात्मक अंश है. इन सकरात्मक अंशों को संगठित करते हुए अस्थाई पिछेहट से क्रांतिकारी आंदोलन को आगे ले जायेंगे.

प्रतिक्रांतिकारी 'कगार' युद्ध से पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठन को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचाने के लिए नीचे उल्लेखित राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक कर्तव्यों को लागू करेंगे.

1. आत्मगत शक्तियों को बचाने को प्राथमिकता देना, नुक्सानों को कम करना.

पिछले एक साल में देशभर में अपना पार्टी, पीएलजीए, जनसंगठनों के 320 कामरेड्स शहीद हुए हैं. अपना पार्टी का संस्थापक नेता में से एक कामरेड चारुमजुमदार की शहदत की 53 साल के बाद अपना पार्टी का महासचिव कामरेड बसवराजु शहीद होना अपना पार्टी के लिए, क्रांतिकारी आंदोलन के लिए बहुत बढ़ा नुक्सान. इस एक साल की दौरान 8 केंद्रीय कमेटी सदस्य, 15 राज्य कमेटी सदस्य कामरेड्स शहीद होने के वजह से अपना केंद्रीय कमेटी, राज्य कमेटीयॉ गंभीर नुक्सान हुआ. यह नुक्सान लम्बा समय तक अपना आंदोलन को प्रभावित करेगी. इस नेतृत्वकारी कामरेडों का नुक्सान के साथ–साथ पार्टी, पीएलजीए बल, जनसंगठनों के नेतालोग–कार्यकर्ता, क्रांतिकारी जनता भी बढ़े पैमाने पे शहीद हुए. इससे पार्टी, पीएलजीए, जनसंगठन, क्रांतिकारी आंदोलन गंभीर नुक्सान हुआ.

इस स्थिति में केंद्रीय कमेटी, पोलित ब्यूरो द्वारा तय किया गया राजनीतिक, सैनिक दावपेंचो को सही तरीका से अमल करते हुए इन नुक्सानों को रोकना. इन नुक्सानों को रोकते हुए पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठनों को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे, उसे पुनरनिर्माण करेंगे.

मार्च 31, 2026 के बाद भी प्रतिक्रांतिकारी युद्ध 'कगार' नाम पे या दूसरा कोई नाम पे चलते रहेगी. कगार युद्ध का लक्ष्य माओवादीयों का निर्मूलन करके 'कार्पोरेट हिन्दुराष्ट्र' बनाना है. इसलिए कार्पोरेटीकरण को, सैनिकीकरण को, हिन्दुत्व को विरोध करने वाले सभी लोगों पर माओवादी, अर्बन नक्सल का छाप लगाकर/कलंक लगाकर उन सभी लोगों पर फासीवादी हमले करने के लिए आरएसएस–भाजपा उसके नेतृत्व में चलने वाले केंद्र, राज्य सरकारे और उसकी अनुषांगिक संगठने तैयारियॉ कर रही हैं. इन विषयों को ध्यान में रखकर अपना आत्मगत शक्तियों को बचाना. कार्पोरेटीकरण को, सैनिकीकरण को, हिन्दुत्व को विरोध करने वाले सभी व्यक्तियों को, शक्तियों को, संगठनों को, संस्थाओं को, पार्टीयों को एकजुट करके सामाजिक जिंदगी की हर क्षेत्र में ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवाद का विरोध में संघर्ष करने से ही अपना आत्मगत शक्तियों को बचा सकते हैं.

2. सोनु, सतीश गद्दारों की गिरोह द्वारा उत्पन्न किए गये संकट को पार करना.

क्रांति का गद्धार, पार्टी का विगठनकारी, प्रतिक्रांतिकारी बन कर अक्टुबर 14, 16 की तारीखों में सोनु, सतीश का गिरोह दुश्मन को आत्मसमर्पण कर, पार्टी का 203 हथियार दुश्मन को सौंप दिये. इस गिरोह की प्रभाव से अक्टुबर आखिरी में उत्तर बस्तर में 21 जन 18 हथियार दुश्मन को सौंप कर आत्मसमर्पण किये, ओडिशा राज्य कमेटी की दायरा की गरियबंद जिला में नवंबर की पहली सप्ताह में 7 जन 6 हथियार दुश्मन को सौंप कर आत्मसमर्पण किये. इस तरह अक्टुबर–नवंबर महीनों में 299 लोग दुश्मन को आत्मसमर्पण होकर 227 हथियारों को दुश्मन को सौंप दिये.

सोनु, सतीश का गिरोह अपना राजनीतिक–सामरिक लैन (नीति) पर हमला करते हुए भारी मात्रा में अपना हथियारों को दुश्मन को सौंप कर पार्टी में संकट को उत्पन्न किये. देशभर में इमानदारी क्रांतिकारी लोग, कगार युद्ध से न डरने वाले लोग सोनु, सतीश गिरोह द्वारा उठाये जाने वोले तर्कों की धोखा को, खोखलापन को तुरंत समझ लिये और उन्हे क्रांति का गद्धार घोषित किये. लेकिन अभी भी देशभर में अपना पार्टी के, पीएलजीए के कुछ लोगों में, क्रांतिकारी शिविर में एक तबका में सोनु, सतीशों की तर्क से अस्तव्यस्तता, निराश का महौल बना हुआ है. इसलिए सोनु, सतीशों की तर्कों की धोखाबाजी को, खोखलापन को भंडाफोड़ करते हुए अस्तव्यस्तता की जगह पे स्पष्टता

दिलाते हुए निराश की जगह पे आत्मविश्वास को भरते हुए अपना राजनीतिक–सामरिक लैन पर दृढ़ता से खड़े करना.

अपना पार्टी की राजनीतिक–सामरिक लैन को गलत साबित करने के लिए सोनु ने प्रधान रूप से तीन तर्क पेश किए. वह, हमे क्रांतिकारी पार्टी नही है, 2007 की कांग्रेस द्वारा तय किया गया केंद्र कर्तव्य अपना आंदोलन की ताकत से परे वामपंती निर्णय है, कानूनी संघर्षों को हमने नकारा. यह तीनों तर्क सोनु ने पेश की.

'पार्टी का मतलब पूर्णकालीन पार्टी कार्यकर्ताओं से बना सभी स्तर का पार्टी कमेटीयॉ ही होता है' ऐसी अजीब तर्क को सामने लाकर देशभर में मौजूद अंशकालीन पार्टी सदस्यों (पार्ट टाईम पार्टी मेंबर्स) से बनी पार्टी को पार्टी मानने से इंकार किया. पूर्णकालीन क्रांतिकारीयों से निर्मित पार्टी कमेटीयों की सदस्य हथियारबंद होकर काम करने की वजह से उसे भी पार्टी का मान्यता देने का इंकार करते हुए उसे सेना का रूप में पेश किया. कार्पेट सेक्युरिटी व्यवस्था (सेक्युरिटी ग्रिड) के चलते कुछ डीवीसी/डीसी सदस्य, एसी सदस्य, पार्टी सदस्य बिना हथियार से सिविल में रहकर काम करने पर भी उने भी पार्टी मानने से इंकार किया. यह सब वास्तविकता से मेल न खाने वाली गलत आंकलन/गलत तर्क है. सोनु का नजर में बिना हथियार से, गांवो में, शहरों में जनता के बीच में रहने वाले पार्टी कमेटीयॉ ही पार्टी है. इसका मतलब, उनका तर्क की इसाब से गांवों में, शहरों में जनता के बीच में रहने वाले पार्ट टाईम पार्टी मेंबर्स से (अंशकालीन पार्टी सदस्य) बना पार्टी, पार्टी नही होता, हथियारबंद होकर काम करने वाले एरिया कमेटी से लेकर केंद्रीय कमेटी तक मौजूद पार्टी कमेटीयॉ पार्टी नही होता/नही है. यह सब, क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण/गठन और काम–काज की पद्धति पर गलत सैद्धांतिक तर्क है, यह सब सिर्फ दक्षिण पंती, संशोधनवादी तर्क है.

2007 की कांग्रेस द्वारा तय किया गया केंद्र कर्तव्य अपना आंदोलन की ताकत से परे वामपंती/अतिवादी निर्णय करके तर्क देना भी दंक्षिणपंती अवसरवादी, संशोधनवादी तर्क है. 2007 तक दंडकारण्य में 27 सालों से वर्ग संघर्ष चल कर वह इलाका गुरिल्ला जोन के रूप में विकसित हुआ, बिहार–झारखण्ड में 37 सालों से वर्गसंघर्ष चल कर वह इलाका भी गुरिल्ला जोन के रूप में विकसित हुआ. उन दो इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन को विस्तृत और मजबूत जनाधार रहती थी. इन दो इलाकों के अलावा देश के कुछ इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन लाल प्रतिरोध इलाका स्तर में रहते थे और कुछ इलाकों में आंदोलन अस्थाई पिछेहट की स्थिति में रहते थे. उस समय, दो क्रांतिकारी पार्टीयों की विलय से माओवादी पार्टी बनने के वजह से देश के क्रांतिकारी शिविर में बहुत अधिक उत्साह, विश्वास की स्थिति थी. इस तमाम परिस्थिति को

ध्यान में रखकर, तत्कालीन अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर दंडकारण्य, बिहार–झारखण्ड इलाकों को आधार इलाका बनाने का केंद्र कर्तव्य को कांग्रेस ने तय की. उपरोक्त दो इलाको में आधार इलाका बनाने के लिए लालप्रतिरोध स्तर में रहने वाले आंदोलनों को संगठित करते हुए उसे गुरिल्ला जोन में विकसित करने का, अस्थाई पिछेहट स्थिति में रहने वाले आंदोलनों को आगे ले जाने का, शहरी आंदोलन को विकसित करने का फौरी कार्यभार भी कांग्रेस ने तय की थी. इन फौरी कार्यभारों को लागू करने के लिए पार्टी में मौजूद गलत रुझानों को सुधारते हुए, माओवादी कार्यशैली में काम करने का कर्तव्य भी कांग्रेस ने तय की थी. लेकिन, पार्टी में व्याप्त गैर सर्वहरा गलत रुझानों को सुधारने के लिए गंभीर कोशिश नही करने के वजह से, केंद्र, राज्य सरकारो द्वारा तीव्र दमन अभियानों को चलाने के वजह से 2012 तक देशव्यापि क्रांतिकारी आंदोलन में कठिन परिस्थिति उत्पन्न हुई. उस स्थिति में जन मुक्ति छापामार सेना को रेगुलर (स्थाई) सेना में विकसित करने का कर्तव्य को, गुरिल्ला युद्ध को मोबाईल युद्ध (चलायमन युद्ध) में विकसित करने का कर्तव्य को लागू नही कर सकने की आंकलन करके केंद्रीय कमेटी ने केंद्र कर्तव्य में बदलाव की. इस सच्छाई को नजर अंदाज करते हुए कांग्रेस निर्देशित केंद्र कर्तव्य अतिवादी निर्णय कहने का मतलब आंदोलन की शक्ति और कमजोरी को ध्यान में रकते हुए राजसत्ता को छीन लेने की संघर्ष से बचना (नही करना) होता है. इसका मतलब सिर्फ आंशिक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष चलाने तक ही क्रांतिकारी आंदोलन को सीमित करना होता है. इसका मतलब क्रांतिकारी आंदोलन को अर्थवाद का, सुधारवाद का बालि चड़ाना, आंदोलन को कानूनी दायरे में ही चलाने का कानूनवाद होता है.

कानूनी संघर्षों को हमने नकारने का तर्क भी झूठा है, सच्छाई को तोड़–मरोड़ करने वाली है. 2007 तक उत्तर तेलंगाणा, आंध्रा, एओबी की आंदोलने अस्थाई पिछेहट में चलेजाने के बाद वहा की आंदोलन की स्थिति को ध्यान में रखकर वहा की पार्टी कई सारे कानूनी–खुला संघर्षों को चलाया. उसके तहत तेलंगाणा में पृथम तेलंगाणा राजनीतिक आंदोलन चलाई. तेलंगाणा, एओबी की आदिवासी इलाकों में 5 वीं अनुसूची, पेसा कानून को लागू करने के लिए संघर्ष चलाई. 2006 से 2011 तक पश्चिम बंगाल में कानूनी, गैर कानूनी संघर्षों को समन्वय कर सिंगुर, नंदीग्राम की संघर्ष चलाये. इसी अवधि में एओबी में जमीन समस्या पर नारायणपटना संघर्ष चलाये. 2008 में केंद्र सरकार द्वारा नया वन कानून लाने के बाद क्रांतिकारी आंदोलन पिछेहट में चले गये इलाकों में, नया विस्तार हुआ इलाको में, आंदोलन प्राथामिक स्तर पे रहने वाले इलाको में उक्त कानून में मौजूद जन पक्षधर विषयों को लागू करने के लिए आंदोलन चलाने के लिए केंद्रीय कमेटी ने मार्गदर्शन दी. आंदोलन मजबूत स्थिति में रहते

हुए जन राजसत्ता अंग (जनताना सरकार) गठन हुआ इलाकों में जन राजसत्ता अंग ही आदिवासीयों को जमीन पट्टा देने के लिए केंद्रीय कमेटी ने मार्गदर्शन दी. उसके बाद, लुटेरे वर्गों की सुधार योजनाओं पर पार्टी का रवैया को बताते हुए 2013 में सेंट्रल रीजीनल ब्यूरो (सीआरबी) ने एक विधान पत्र (पालिस पेपर) जारी की थी. उसमें आंदोलन की ताकत और कमजोरी को ध्यान में रखकर, आंदोलन की स्थिति में होने वाले बदलावों को ध्यान में रखकर कानूनी–गैर कानूनी, खुला–गुप्त संघर्ष और संगठन की रूपों को इस्तेमाल करते हुए वर्गसंघर्ष को चलाने का बारे में लिखी गई. उसके बाद गढ़चिरोली जिला में पेसा, ग्रामसभाओं का गठन के लिए आंदोलन चलाया गया. 2021 से दंडकारण्य भर में पेसा, ग्रामसभाओं की अधिकारों की अमल के लिए खुला–कानूनी संघर्ष चलती रही. माओवादी पार्टी गठन होने के बाद देशभर में विस्थापन के विरोध में कानूनी–खुला जन आंदोलन को पार्टी ने चलाई. इन तमाम तथ्यों को जानबूझकर नजर अंदाज करते हुए सिर्फ दंडकारण्य की विषय को ही बताते हुए उस भी तोड–मरोड कर बताते हुए कानूनी संघर्षों को नकारने की बाते कहने का मतलब क्रांतिकारी आंदोलन को सिर्फ कानूनी संघर्ष तक ही सीमित करने वाले संशोधनवादी तर्क ही होता है.

सोनु द्वारा इस बीच में लिखा गया दो लेखों को, सशस्त्र संघर्ष की अस्थाई विराम की प्रेस विज्ञप्ति को, जनता को विज्ञप्ति को, काडरों को विज्ञप्ति को जोडकर देखने से, उसमें अपना पार्टी का क्रांतिकारी लैन को नकारने के साथ–साथ हथियारबंद संघर्ष को भी नकारने/इंकार करने की बात लिखी गई. लेकिन उसमें कोई वैकल्पिक लैन कुछ भी नही है. उसका लैन (सोनु का) सिर्फ दुश्मन का सामने गुटने टेकने का आत्मसमर्पण का लैन. उनका तर्कों का पूरा सारांश कानूनी दायरे में जन आंदोलन चलाना, हमे गुप्त पार्टी नही है करके कहते हुए पूरा पार्टी को खुला पार्टी में तब्दील करना.

यह सैद्धांतिक इसाब से संशोधनवाद के अलावा और कुछ नही. पार्टी बताया हुआ बातों का इंकार करते हुए पार्टी का हथियारों को दुश्मन को सौंप कर प्रतिक्रांतिकारी (कौंटर रेवेल्युशनरी) बन गया. उनका अनुयायी को इकट्टा करके पार्टी को विगठन कर दिया. इन सभी बातों सतीश भी एकमत होकर क्रांति का गद्धार, पार्टी का विगठनकारी, प्रतिक्रांतिकारी बन गया. इसलिए सोनु, सतीश दोनों द्वारा उठाये गये तर्कों की धोखेबाजी को खोखलापन को देशभर में तमाम क्रांतिकारी शिविर को समझते हुए, क्रांतिकारी शिविर में व्याप्त अस्तव्यस्तता को दूर करते हुए स्पष्टता दिलाना, उसमें व्याप्त निराश को हटाते हुए आत्मविश्वास भर देना. सोनु, सतीश द्वारा सामने लायी गई तर्कों में कोई ईमानदारी नहीं है. वे दोनों सिर्फ जान चले जाने की डर के वजह से अपना आत्मसमर्पण को तर्क संगत बताने के लिए किये गये तर्क ही है. अपना पार्टी

महासचिव ने हथियारबंद संघर्ष को अस्थाई तौर पर छोडने की बात कही–ऐसी झूठे प्रचार करते हुए, सैद्धांतिक इसाब से कमजोर रहने वाले पार्टी काडरों को, पीएलजीए बलों को धोखा देकर दुश्मन का सामने आत्मसमर्पण करवाये. इसलिए इन दोनों की धोखेबाजी को क्रांतिकारी शिविर में भंडाफोड़ करना.

3. साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद (सीबीबी), सामंतवाद की गटजोड के विरोध में, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी आरएसएस-भाजपा की केंद्र, राज्य सरकारों के विरोध में वर्गसंघर्ष को तेज करेंगे.

अपना केंद्रीय कमेटी द्वारा तैयार की गई 'भारत देश की उत्पादन प्रणाली में बदलाव–अपना राजनीतिक कार्यक्रम' (एमओपी दस्तावेज), 'भारत देश में जाति का सवाल–हमारा दृष्टिकोण', 'भारतवर्ष में राष्ट्रीयताओं का सवाल–हमारी पार्टी का दृष्टिकोण' दस्तावेजों की मार्गदर्शन में उत्पीडित वर्गों को (मजदुर, किसान, मध्यमवर्ग (पेटीबुर्जुआ), राष्ट्रीय पूंजीपति), उत्पीडित समुदायों को (महिला, दलित, आदिवासी, धार्मिक अल्पसंख्याक लोग), उत्पीडित राष्ट्रीयताओं की लोगों को लामबंद करते हुए वर्ग समस्याओं पर, सामाजिक समस्याओं पर, राष्ट्रीयता सवालों पर वर्गसंघर्ष को चलाना. देश की असमान स्थिति (unevenness) को ध्यान में रखकर एमओपी दस्तावेज में देश को 7 केटिगरि (वर्गीकरण) करके संबंधित इलाकों के लिए राजनीतिक कार्यक्रम को तैयार किए. उस राजनीतिक कार्यक्रम के अनुसार अपन वर्गसंघर्ष को तेज करना. 2014 में केंद्र में ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी आरएसएस–भाजपा सत्ता में आने के बाद वह राज्य फासीवाद में बदल गयी. जब से लेकर अब तक देश के उत्पीडित वर्गों पर, उत्पीडित सामाजिक समुदायों पर, उत्पीडित राष्ट्रीयताओं पर आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक कुलमिलाकर सामाजिक जिंदगी का हर क्षेत्र में वह हमला करते आ रही है. इसके तहत माओवादीयों को निर्मूलन करके 'माओवादी रहित भारत' को निर्माण करने की प्रयास कर रही है. देश की इन्फोर्समेंट डैरेक्टरेट (ईडी) को, सीबीआई को, चुनाव आयोग को, न्याय व्यवस्था को सब को डरा कर, अपने हवाले करवाके, अपना अनुकूल बनाके संघर्ष करने वाले जनता पर, विपक्ष पर हमला करवा रही है. इसके तहत 'विपक्ष मुक्त भारत' को निर्माण करने के लिए प्रयास कर रही है. इसलिए आज ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी आरएसएस–भाजपा की राज्य फासीवाद देश के लिए, देश की जनता के लिए प्रधान दुश्मन बन गई. इस स्थिति में देशभर में अपना पार्टी यूनिट रहने की हर जगह पे उसके विरोध में मिलकर काम करने के लिए आगे आने वाले सभी व्यक्तियों को, शक्तियों को, संगठनों को, संस्थाओं को, पार्टीयों को एकजुट करके, बुर्जुआ पार्टीयों को भी अस्थाई, कार्यनीतिक मित्र मानकर उन्हे भी एकजुट करके साजा कार्यक्रम पर आधारित होकर साजा मंचों (संयुक्त मोर्चा) को गठन कर वर्गसंघर्ष को तेज करना. इसके तहत, ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी

आरएसएस–भाजपा की केंद्र, राज्य सरकारे 2047 तक देश को 'विकसित भारत' बनाने की जोरदार प्रचार (हाईप) की धोखा को हमेशा आधार सहित भंडाफोड़ करना. इस साल अप्रैल महीना में जम्मु–कश्मीर में पहलगांव के पास हुई आतंकवादी हमला को बहाना बनाकर भारतदेश ने पाकिस्तान पर 'आपरेशन सिंधुर' नाम से मिलिटरी आपरेशन्स चलाई. चाहे पाकिस्तान से हो, चाहे अन्य किसी सरहदी देशों से हो सीमा विवाद से लेकर अन्य कोई भी समस्या को शांतिपूर्ण तरीकों से, चर्चाओं से, कूटनीति से परिष्कार करना. इसके विपरीत मिलिटरी आपरेशन्स के जरिये, युद्ध के जरिये समस्या परिष्कार के लिए कोशिश करना सही नही. इसके विपरीत पाकिस्तान पर मिलिटरी आपरेशन्स चलाई. फिर अमेरिका की आदेश से चार दिन के बाद उस आपरेशन्स को रोक कर अमेरिका के प्रति अपना आत्मसमर्पण को दर्शया. एक तरफ अमेरिका के प्रति आत्मसमर्पण का प्रदर्शित करते हुए बीते 7 महीनों से देश की जनता में पाकिस्तानी विरोधी उग्र राष्ट्रवाद को, युद्ध उन्माद को बढ़खा रही है. पिछले 11 सालों से भाजपा केंद्र में सत्ता में रहकर, देश में गरीबी को, बेराजगारी को, महंगाई को, किसानों की आत्मसत्याओं को और भी कई अन्य समस्याओं को हल करने में विफल होते आ रही है और दूसरा तरफ इन समस्याओं को लेकर संघर्ष करने वाले जनता को संघर्ष की रास्ता से बटकने के लिए हमेशा हिन्दु धर्म उन्माद को, युद्ध उन्माद को बढ़खा रही है. भाजपा का, मोदी का अंतरंग मित्र (क्रोनी) अदानी को देश की सम्पत्ती को कौडी के दाम पर सौंप रही है. अमेरिका में अदानी कंपनी द्वारा किये गये धांधलियों के वजह से उन्हे वह सजा मिलने का स्थिति उत्पन्न हुई. इस स्थिति में अदानी को बचाने के लिए मोदी ने देश की फायदाओं को अमेरिका सामने गिरवी रक रहा है. देश की फायदा के लिए इजराईल, अफ्गनिस्तान से कई सारे समझौते किये जा रहे हैं. बीते 11 सालों की भाजपा की मनुवादी सरकार ने दलितों पर, आदिवासीयों पर हमले बढ़ा रही है और दलित, बहुजन उच्छ अधिकारीयों (ब्यूरोक्राट्स) पर भी मनुवादी अधिकारीयों को उत्पीडन, अपमान बढ़ गई. बीते 11 सालों में कृषि, औद्योगिक, सेवा क्षेत्रों में देशी, विदेशी कार्पोरेट कंपनीयों का लूट और उत्पीडन कई गुणा बढ़ गई. इन तमाम समस्याओं के वजह से देश में व्यापक जनता अलग–अलग स्तर पे संघर्ष कर रही है. इस स्थिति में मनुवादी आरएसएस–भाजपा की केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा, देश की जनता का विरोध में अपनाने वाली सभी आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक नीतियों के विरोध में, देशी, विदेशी कार्पोरेट कंपनीयों की विरोध में प्रचार, आंदोलन, संघर्ष चलाते हुए अपना जनाधार को बढ़ाना. देशभर में वर्गसंघर्ष को तेज करते हुए जनाधार को बढ़ाते हुए उसके ऊपर आधारित होकर गुरिल्ला युद्ध को चलायेंगे.

प्यारे कामरेड्स, जनता!

1973 में शुरू हुआ साम्राज्यवादी सार्वजनिक/साधारण संकट को पार करने के लिए साम्राज्यवाद द्वारा सामने लाई गई साम्राज्यवादी भूमंडलिकरण नीति 2008 की विश्व व्यापी आर्थिक संकट उत्पन्न होने पर विफल साबित हुआ. यह संकट अब तक भी हल नही हुई. उस संकट को हल करने के लिए पूंजीवादी–साम्राज्यवादी देशों ने, पिछडे हुआ/उत्पीडित देशों ने अपनाई/अपनारही आर्थिक, राजनीतिक, सामरिक, तकनीकी नीतियॉ सभी पूरी तरह विफल होगई/ विफल हो रही है. साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण नीतियों को लागू करने के लिए दुनिया भर में कई देशों में दक्षिणपंती (रैट विंग), रेसिस्ट (नस्लवादी), फासीवादी पार्टीयॉ सत्ता में आई. इस दक्षिणपंती/रूढ़ीवादी, नस्लवादी, फासीवादी पार्टीयॉ अपना–अपना देशों में पूंजीवादी जनवादी अधिकारों को भी कुचलकर तानाशाही को, फासीवादी को अमल किये. साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण नीतियों को लागू करने के तहत एशिया, आफ्रिका, लैटिन/लातीनी अमेरिका देशों में साम्राज्यवादी वित्तीयपूंजी का हमला तेज रूप से चलने पर भी, उसकी हमला पूंजीवादी–साम्राज्यवादी देशों में भी वहा की मजदुर वर्ग पर, मध्यम वर्ग पर चलती रही/ चल रही. एशिया, आफ्रिका, लातीनी अमेरिका देशों में साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी को दलाल बन कर वहा की दलाल नौकरशाही पूंजीपती वर्ग, सामंती वर्ग साम्राज्यवादी गटजोड संबंधित देशों में लूट और उत्पीडन को बढ़ाई. इसके विरोध में दुनियाभर में कई देशों में अलग–अलग स्तर पे संघर्ष चल रही है. 2012–13 में आफ्रिकी देशों में 'गुलाबी क्रांतियॉ' फूट पडी. लेकिन उससे लुटेरे व्यवस्थाओं में बदलाव नही आई. बीते 3–4 सालों में, इस बीच में श्रीलंका, बंग्लादेश, नेपाल, फिलिप्पीन्स, पाकिस्तान आक्रमित कश्मीर में उभरी जन विद्रोह के लिए फौरी तौर पर कुछ कारण रहने पर भी उसके पीछे साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण, संबंधित देशों में दलाल नौकरशाही पूंजीवादी, सामंतवादी लूट और उत्पीडन ही मुख्य कारण है. इस बीच में पश्चिम यूरोप देशों में मजदुर वर्ग, मध्यम वर्ग वित्तीय पूंजी की लूट के विरोध में आंदोलन कर रहे हैं. अमेरिका में न्यूयार्क शहर में डेमाक्रटिक पार्टी का उम्मीदवार जोहरान ममदानी मेयर पद के लिए जीत हासिल की. इसके पीछे दक्षिणपंती/रूढ़ीवादी, नस्लवादी, फासीवादी ट्रंप की शासन–प्रशासन पर वह की मजदुरों में, मध्यम वर्ग में, आप्रवासियों में व्याप्त रोष–नाराजगी कारण बना. पिछले 2–3 सालों से यूरोप के देशों में और दूसरा देशों में रूढ़ीवादी, नस्लवादी, फासीवादी पार्टीयों को जगह पर सोशल डेमाक्रटिक पार्टीयों की, डेमाक्रटिक पार्टीयों की उम्मीदवार जीतने का पीछे वह साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण नीतियों के प्रति, रूढ़ीवादी, फासीवादी शक्तियों के प्रति जनता में व्याप्त रोष कारण बन रही है. आने वाले दिनों में यह रुझान और भी बढ़ने का संभावना है. इस स्थिति को इस्तेमाल करके दुनियाभर में कम्युनिस्ट

क्रांतिकारी लोग अपना–अपना देशों में क्रांतिकारी पार्टी के रूप में संगठित होना, छोटा पार्टी को बढ़ा पार्टी में बदलना, कमजोर पार्टी को मजबूत करना.

पिछले एक साल से अमेरिका–चीन का बीच में आयात–शुल्क (सीमा–शुल्क) की प्रतियोगिता (टारिफवार) चल रही है. इस बीच में नवंबर की पहली सप्ताह में अमेरिका की अध्यक्ष ट्रंप और चीन का अध्यक्ष जिनपिंग दोनों दक्षिण कोरिया की बूसान शहर में मिलकर एक अस्थाई समझौता की. इस समझौता की वजह से अस्थाई तौर पर अमेरिका–चीन का बीच में सीमा–शुल्क विवाद रुक गई. चीन से आयात होने वाले सामान पर 10 प्रतिशत शुल्क घटाने के लिए अमेरिका राजी हो गई. दुर्लभ खनिज पदार्थों को अमेरिका को निर्यात करने पर लगाई प्रतिबंद को हटाने के लिए चीन ने राजी हो गई. आर्थिक मंदी से झूझ रहे अमेरिका, चीन ने इस समझौता करने पर मजदुर हो गई. इस अस्थाई समझौता से अमेरिका, चीन का बीच में मौजूद प्रतियोगिता रुकेगा नही. क्योंकी, दोनों देश दुनिया पर प्रभुत्व (hegemony) खायम करने के लिए प्रतियोगिता पर हैं. इस प्रतियोगिता के चलते आने वाले दिनों में अमेरिका, चीन का बीच में सभी क्षेत्रों में तनाव, वैर जरूर उत्पन्न होगी.

दुनिया में जब से पूंजीवादी व्यवस्था का उत्पन्न हुआ तब से विशेषकर वह साम्राज्यवादी व्यवस्था में विकास होने के बाद वह पर्यावरण के लिए विनाशकारी बन गई. इस से, आज मानव जाति का अस्तित्व के साथ–साथ सारी पृथ्वी का अस्तित्व खतरे में पड गई. इस स्थिति में संयुक्त राष्ट्र संघ की नेतृत्व में आयोजित होने वाले पर्यावरण बचाने का शिखर सम्मेलनों से कुछ होने वाले नहीं है. पूंजीवादी–साम्राज्यवादी व्यवस्था को खत्म/ध्वस्त करने की लक्ष्य को लेकर पर्यावरण बचाने का आंदोलन चलने से ही पृथ्वी को, मानव जाति को बचा सकता है. उस दिशा में दुनियाभर के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी लोग पर्यावरण बचाने का आंदोलन को चलाना है.

दुनिया के सभी देशों पर सीमा–शुल्क लगाने की प्रक्रिया के अंतर्गत अमेरिका भारतदेश पर अगस्त महीना में 25 प्रतिशत सीमा–शुल्क लगाई. रूस से तेल खरीद ने की वजह से भारत पर अमेरिका 25 प्रतिशत अतिरिक्त सीमा–शुल्क लगाने से वह 50 प्रतिशत तक पहुंच गई. इससे भारत की अर्थ व्यवस्था गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है. इस स्थिति में अमेरिका को प्रसन्न करने के लिए भारत ने रूस से तेल आयात करना कम कर दिया. अमेरिका से अपना देश आयात करने वाले कपास पर 11 प्रतिशत सीमा–शुल्क की छूट की हटाने के लिए भी सोच रही है. यह सब अमेरिका का सामने आत्मसमर्पण के अलावा और कुछ नही. इस स्थिति में भारत–अमेरिका का बीच में चल रही व्यापार समझौता भारत देश की जनता के विरोध में ही बनेगी. इसलिए भारत की सभी लोग विशेषकर किसान, दूध उत्पादक लोग, मचवारे भारत सरकार की

आत्मसमर्पण वाली व्यापार समझौता का विरोध में झुझारू संघर्ष कर अपना हितों की रक्षा करना. आत्मा निर्भरता के नाम पर प्रधानमंत्री नरेंद्रमोदी की सभी बाते सिर्फ झूठा/धोखेबाजी बाते हैं. साम्राज्यवादी देशों के साथ किये गये असमान, अन्यायपूर्ण आर्थिक, व्यापार–वाणिज्य समझौता को रद्ध करने से ही आत्मा निर्भरता को हासिल कर सकते है. वह साम्राज्यवाद से देश को मुक्त दिलाने वाले राष्ट्रीय जनवादी क्रांति से ही संभव होती है. सभी साम्राज्यवादी देशों के प्रभुत्व से मुक्ति पाकर अपना देश सार्वभौम (sovereign), स्वातंत्र बनने से ही अपना देश स्वावलंबी बनेगी. इस कर्तव्य को लुटेरे राजनीतिक पार्टीयॉ नही कर सकते है. इसलिए माओवादी पार्टी का नेतृत्व में चल रही क्रांतिकारी आंदोलन को सफल बनाना ही एकमात्र और सही रास्ता.

चुनाव आयोग को अपना कठपुतली बनाकर भाजपा ने वोट चोरी करते हुए, कई सारे धांधलिया करते हुए विधानसभा, संसदीय चुनावों में जीत हासिल करते आ रही है. इस बीच की बिहार विधानसभा चुनावों में भी कई सारे धांधलियों को, वोट चोरी को अंजाम देकर जीत हासिल की. इस स्थिति में देश की संसदीय प्रणाली का धोखाबाजी, नकली चेहरा फिर एक बार उजागर हुआ. ऐसे में सच्छा जनवादी व्यवस्था को निर्माण करने के लिए नवजनवादी क्रांति को सफल करके नवजनवादी व्यवस्था को निर्माण करना है. इसलिए देश की व्यापक जनता को संगठित कर, हथियारबंद कर इस लुटेरे व्यवस्था को ध्वस्त करना.

प्यारे कामरेड्स, जनता!

वर्तमान में क्रांतिकारी आंदोलन गंभीर नुक्सान की स्थिति में है. इस स्थिति में विगत दिनों के जैसा अपना पीएलजीए वर्षगांठ उत्सवों को नही मना सकते है. इसलिए आंदोलनरत इलाको में पार्टी, पीएलजीए बलों की सुरक्षा को महत्व देते हुए इस वर्षगांठ उत्सवों को मनाना. देशभर में जंगली, मैदानी, शहरी इलाकों में सभी जगह में गृप मीटिंग, छोटे–छोटे मीटिंग करते हुए, गुप्त रूप से मनाना. आंदोलन की इलाको में पोस्टर चिपकाते हुए, पर्चा बांटते हुए जनता में पीएलजीए को मजबूत करने का जरूरत को समझाना चाहिए. सही योग्यता रहने वालों को पीएलजीए में भर्ती करना.

नारा

- ★ प्रतिक्रांतिकारी 'कागार' युद्ध से पार्टी को, पीएलजीए को, जनसंगठनों को, क्रांतिकारी आंदोलन को बचायेंगे!
- ★ साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद विरोधी (विदेशी, स्वदेशी कार्पोरेट कंपनीयों की विरोधी), सामंतवादी विरोधी गठजोड का विरोध में वर्गसंघर्ष को तेज करेंगे!
- ★ ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी आरएसएस-भाजपा केंद्र, राज्य सरकारों के विरोध में जनआंदोलनों को तेज करेंगे!
- ★ नुक्सानों को कम करेंगे! आत्मासमर्पण को, क्रांति के प्रति गद्दारी को विरोध करेंगे! उत्पीडित जनता की फायदा के लिए दृढ़ता के साथ लडेंगे!
- ★ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद जिंदाबाद!
- ★ भारत की नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद!
- ★ जनमुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) जिंदाबाद!
- ★ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ,
सेंट्रल मिलिटरी कमिशन,
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दिनांक : 14.11.2025.